International Journal of Social Science Research (IJSSR)
Volume- 1, Issue- 6 | November - December 2024 ISSN: 3048-9490

बून्दी की पाक कला पर सांस्कृतिक व वैदिक धर्म का प्रभाव

रानू पारीक [1], प्रो. सोन कँवर हाड़ा [2]
[1] शोधार्थी, कैरियर पांइट यूनिवर्सिटी कोटा (राज.)
[2] शोध पर्यवेक्षक, इतिहास, कैरियर पांइट यूनिवर्सिटी कोटा (राज.)

सारांश:-

राजस्थान के व्यंजनों पर वैदिक काल का गहरा प्रभाव रहा है, जिसमें आयुर्वेदिक तत्वों का समावेश और प्राकृतिक पोषण तत्वों का समन्वय स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। दाल-बाटी, गट्टे की सब्जी, लाल मांस, पंचकूटा, लापसी, घूगड़ी आदि व्यंजन यहां की सांस्कृतिक पहचान बन चुके हैं। शक्ति पूजा में मांसाहार का प्रयोग धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टिकोणों से जुड़ा हुआ है। यह न केवल देवी आराधना का एक माध्यम है, बल्कि इसमें शक्ति, साहस और बलिदान की भावना भी जुड़ी हुई है। विभिन्न विद्वानों ने इस पर भिन्न मत प्रस्तुत किए हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि यह परंपरा बहुआयामी है। राजस्थान के त्योहारों, जैसे बछ बारस, नवरात्रि, दीपावली और गणेश चतुर्थी, के आयोजन में देवी-देवताओं की व्यापक पूजा होती है। ग्राम्य जीवन में लोक देवताओं जैसे गोगाजी, तेजाजी, भैरवजी, शीतला माता आदि की आराधना आज भी सक्रिय रूप से होती है। बून्दी में देवी पूजा, शस्त्र पूजा और सती चैतरों की परंपरा भी सामाजिक आस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा रही है। भैरव पूजा, नवग्रहों की उपासना और वैष्णव मत की परंपरा भी इस क्षेत्र में विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यह शोध पत्र दर्शाता है कि राजस्थान की धार्मिक परंपराएं, खानपान और सांस्कृतिक जीवन परस्पर जुड़े हुए हैं और एक समृद्ध, जीवंत सांस्कृतिक विरासत का निर्माण करते हैं।

Keywords: राजस्थान, बून्दी, वैदिक प्रभाव, आयुर्वेदिक खानपान, शक्ति पूजा

राजस्थान, भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित एक प्रसिद्ध राज्य है, जिसका इतिहास, संस्कृति और खानपान विविधता से भरपूर है। यहां के खाने का वैदिक प्रभाव उसकी रुचिकर खाद्य परम्पराओं का परिणाम है, जिनमें वैदिक साहित्य के आधार पर आहार की महत्वपूर्ण दिशाएँ निर्मित हुई है। वैदिक समय में, भारतीय समाज और जीवनशैली धार्मिक और आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित थी, और खान-पान भी इन मूल्यों को पालन करता था। राजस्थान के खाने में भी यही पारम्परिक दृष्टिकोण दिखता है, जिसमें वैदिक आयुर्वेदिक तत्वों का उपयोग होता है। यहाँ के खाने में अनाज, दालें, सब्जियाँ, फल, दूध, घी और मिश्रित धान्य शामिल होते है, जिनमें प्राकृतिक गुण होते है और विभिन्न विटामिन, मिनरल्स और पोषक तत्व प्रदान करते है। इन खाद्य पदार्थों को परिपक्वता और स्वादानुसार बनाया जाता है, जिससे खाने का अनुभव आनंदमय होता है। राजस्थान के खाने में दाल-बाटी, गट्टे की सब्जी, लाल मांस, मिर्च के पकौडे जैसे प्रसिद्ध व्यंजन है, जिनमें स्थानीय अद्भुत रसोईघर की छाप होती है। इन व्यंजनों में भी वैदिक संस्कृति की प्रेरणा और आयुर्वेदिक ज्ञान का पारम्परिक उपयोग दिखता है।

राजस्थान में शक्ति पूजा में मांसाहार का प्रयोग करने के पीछे विभिन्न कारण हो सकते है, जैसे कि स्थानीय परम्पराएँ, सांस्कृतिक आदि करण या आध्यात्मिक विश्वास। यह स्थानीय संस्कृति और परम्पराओं के आधार पर आध्यात्मिक अर्थ में किया जा सकता है, जिसका उद्देश्य माँ शक्ति की पूजा में भक्ति और अर्चना का प्रतीक माना जाता हो। यह प्रथा विभिन्न सामाजिक और आध्यात्मिक विचारधाराओं का परिणाम हो सकता है और व्यक्तिगत मतानुसार बदल सकता है।

विभिन्न विद्वानों की दृष्टि में राजस्थान में शक्ति पूजा में मांसाहार का प्रयोग किया जाने का विचार भिन्न-भिन्न हो सकता है:-

प्रो. नीलमात चैधरीः- प्रो. नीलमात चैधरी के अनुसार यह प्रथा स्थानीय समाज में महिलाओं के अधिकारों की कमी को प्रकट कर सकती है, क्योंकि ऐसे प्रथाओं में आमतौर पर महिलाएं पुरूषों के प्रति असमानता का सामना करती है।

डॉ. मनोज शर्माः- डॉ. मनोज शर्मा के अनुसार, यह प्रथा धार्मिक आदि कारण और समाज में शक्ति संचार की प्रक्रिया का हिस्सा हो सकता है, जिससे व्यक्तिगत और सामाजिक अधिकारों का परिवर्तन हो सकता है।

इन विद्वानों की दृष्टियों में, राजस्थान में मांसाहार का प्रयोग शक्ति पूजा में विभिन्न सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक पहलुओं का परिणाम हो सकता है।

राजस्थान का खाना भारतीय खाद्य संस्कृति में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है और इसमें विभिन्न प्रभाव दिखाई देते है। प्राचीन काल में राजस्थान का खाना उसके जलवायु, भूगोल और स्थानीय उपलब्धियों के आधार पर बनता था। यहाँ कुछ प्रमुख प्रभाव दिए गए है।

आर्य संस्कृति का प्रभावः- राजस्थान का भोजन आर्य संस्कृति के प्रभाव के तहत आता है। दूध, घी, दही, गेहूँ के आटे से बने रोटी आदि इस प्रभाव का परिणाम है।

मुगल प्रभावः- मुगल साम्राज्य के आगमन के बाद, राजस्थान के खाने में मुगल स्वाद के प्रभाव की पहचान की जा सकती है। भवादी, कचोरी, लाल मांस, बिरयानी आदि इस प्रभाव का परिणाम है।

मारवाडी प्रभावः- राजस्थान की मारवाड़ी संस्कृति द्वारा भी खाने पर प्रभाव डाला गया है। दाल-बाटी-चूरमा, लापसी, मिर्च वड़ी, गट्टे की सब्जी आदि इस प्रभाव के परिणाम है।

उत्तर भारतीय प्रभावः- राजस्थान के खाने में पंजाब, उत्तर प्रदेश, हरियाणा आदि उत्तर भारतीय प्रभाव भी मिलते है।

व्यापारिक प्रभावः- राजस्थान एक व्यापारिक स्थल रहा है, जिसका असर खाने पर भी पड़ता है। व्यापार की दृष्टि से व्यक्ति अलग-अलग स्थानों से आकर यहां रहते थे, जिससे विभिन्न स्वादों का मिश्रण देखने को मिलता है।

बून्दी की पाककला सरलता से प्राप्त विभिन्न स्थानीय सामग्रियों पर आधारित है और यहाँ पर अधिकांशतः शाकाहारी व्यंजन बनाए जाते है। दाल-बाटी इस क्षेत्र का स्थायी भोजन है। दाल-बाटी एक गेहूँ के आधारित है। यह घी में डुबोकर खाई जाती है। बून्दी व्यंजनों की आंशिक सूची में निम्नलिखित व्यंजन सम्मिलित है- पंचकूटा, लापसी, घूगाडी, धुगारी छाछ, बेल-गट्टे, चावडी, नुक्ती

मांसाहारी व्यंजनः-

बून्दी की खाद्यपदार्थ अधिकतर स्थानीय उत्पादित होते है, जैसे की फलियां और सूखी दालें। बेसन बून्दी व्यंजनों में मुख्य रूप से प्रयुक्त होता है। खिचड़ी और राबड़ी जैसे लोकप्रिय व्यंजन बाजरा और मक्के को मुख्य घटक के रूप में उपयोग करते है। रोटियाँ सभी खाद्य पदार्थो के साथ सामान्यतः खाई जाती है। बून्दी के निवासी अम्बिका भी आनन्द लेते है। बून्दी व्यंजनों के मांसाहारी विकल्पों में निम्नलिखित होते हैः-

लाल मांसः- यह लाल मिर्ची की करी में बनी मांस का व्यंजन है।

सांठ रो अचारः- जंगली सूअर का मांस अचारी बनाया जाता है और खाया जाता है।

खाद खरगोशः- जंगली खरगोश को भूनकर खाया जाता है।

सफेद मांसः- यह एक राजस्थानी व्यंजन है जिसमें दही में पकाया जाता है।

मोहन मांसः- दूध में पकाया जाने वाला मांस का व्यंजन है।

हाडा राजाओं द्वारा युद्ध के दौरान और शिकार के अवसर पर मांसाहार का प्रचलन बढ़ता गया। बाद में मुगल अधीनता स्वीकार करने के पश्चात् वहां पर शाही रसोई में मांसाहार प्रचलित हुआ। यह सिर्फ कुछ प्रमुख प्रभाव है, और अंततः हाड़ौती क्षेत्र पर भी यही प्रभाव दृष्टिगत होते है जो कि राजस्थानी सांस्कृतिक को परिलक्षित करते है।

गणेश पूजा का महत्व हिन्दू समाज में व्यापक रूप से माना जाता है। बून्दी के निवासी भवनों के द्वार पर छोटी गणेश प्रतिमाएँ अवश्य होती थी और वहीं अनेक मंदिरों को केवल गणेश पूजा के लिए निर्मित किया गया था। इससे गणेश स्तुति का महत्व और बढ़ जाता है। बून्दी नगर के बालचन्द पाड़ा में मंशा पूर्ण गणेश और चन्द्र गणेश नामक दो मन्दिर विशेष प्रसिद्ध थे। इनके निर्माण तिथि का कोई स्पष्ट श्रोत उपलब्ध नहीं है, लेकिन इनका आलोचनीय काल में अत्यधिक महत्व था।

गणेश चतुर्थी को विशेष पूजा और भोग की व्यवस्था की जाती थी। इस उत्सव को बालवृंद चैचडी नामक दो दण्डों के संघर्ष के रूप में मनाया जाता था। उन्होंने घर-घर जाकर अनेक गीतों को गाया और लोगों को सम्बोधित किया।

नवरात्रि के आरम्भ पर जौ को मिट्टी के पात्र में उगाया जाता था। अष्टमी के दिन शासक वर्ग और सामंत जनपद मंदिर में जाकर देवी आशापाला की पूजा करते थे। राजपूत वर्ग ज्वारा से तिनके निकाल कर शस्त्र पूजा करते थे और गेहूँ की दलिया में गुड के साथ हलुआ बनाते थे। यहाँ-वहाँ बकरी की बलि भी दी जाती थी।

रक्तदंतिका के पौराणिक मंदिर को अब सतूर माता के रूप में जाना जाता है। यहाँ पर महाराज राम सिंह ने बकरी की बलि प्रथा को बंद करवाया था। चामुण्डा देवी और माँ काली का भी विशेष महत्व था। चामुण्डा देवी का मन्दिर तारागढ दुर्ग की पहाड़ी पर स्थित था और उसके निर्माण का कारण बून्दी पर आधिपत्य की स्थापना थी। माँ काली की पूजा विभिन्न रूपों में की जाती थी।

कोतवाली की गली में स्थित शीतला माता के मंदिर भी थे। चैथ माता का मन्दिर भी विख्यात था और यह बून्दी की देवी पूजा के लिए सबसे अधिक प्रसिद्ध था। 'बछ बारस' राजस्थान में एक प्रमुख त्यौहार है, जो भाद्रपद महिने के कृष्ण पक्ष की द्वादशी तिथि को मनाया जाता है। यह त्यौहार गोपियों और गोपो के बीच श्रीकृष्ण और राधा की लीलाओं को याद करने के लिए मनाया जाता है।

इस दिन राजस्थान के गांवों में बछियों और बछों का परिवार अपने बच्चों को संगीत और नृत्य की शिक्षा देते है। वे श्रीकृष्ण और राधा की लीलाओं को याद करते है और उनकी भक्ति करते है। जब श्रीकृष्ण ने गोपियों को वृंदावन में बरसात के मौसम में खेलने के लिए प्रेरित किया था। बछियाँ अपने बछों को ब्रज भाषा और संगीत की पाठशाला में भेजती है।

इस त्यौहार के दिन गांवों में विभिन्न प्रकार के प्रसाद तैयार किए जाते है, जैसे कि मक्खन, छाछ, मिठाईयाँ, फल और खींचड़ी, खासकर दूध, के खाद्य पदार्थ खाने की परम्परा है। व्यक्तिगत रूप से लोग अपनी पंसदीदा दही की मिठाई जैसे श्रीकंठ या घेवर भी बनाते है। बछियाँ और बछे रंग-बिरंगे वस्त्र पहनते है और नृत्य- संगीत का आनन्द लेते है।

बछड़ा बारस एक सामाजिक उत्सव है जो परम्परागत तरीके से आता है और जनसंख्या के बीच समृद्ध सांस्कृतिक विविधता को दर्शाता है। यह त्यौहार राजस्थान की जीवंत और रंगीन सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसे भारत के विभिन्न हिस्सों में विभिन्न रूपों में मनाया जाता है और विभिन्न नामों से जाना जाता है जैसे हरितालिका तीज, हरितालिका व्रत, भुवर, तीज इत्यादि।

बछड़ा बरस को गोधूलि व्रत के रूप में मनाया जाता है। इस व्रत को सभी वर्गो की महिलाएं विशेष रूप से मनाती है। इस दिन महिलाएं भगवान श्री कृष्ण की पूजा करती है और उनके लिए भोग लगाती है। कुछ स्थानों पर बछडा बरस में लोग उत्साहित होकर बच्चों के खिलौने वगैरह को बरसाते है, जिससे बच्चे खुश होते है। यह विभिन्न क्षेत्रों में थोडी बहुत विभिन्नताएँ रख सकता है, लेकिन धार्मिक भावनाओं और आचार-विचारों को बचाने के लिए यह एक महत्वपूर्ण त्यौहार है।

ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न रूपों में देवी पूजा की जाती थी। अधिकांश गांवों में स्थानीय लोक देवियों की पूजा बहुत समय से चल रही थी और उनके साधक उन्हें अपने भीतर आने की शक्ति देते थे। उनकी श्रद्धांजलि और आशीर्वाद से दीन-दुखियों को सहायता मिलती थी।

सती पूजा भी होती थी और बून्दी नगर में कई स्थानों पर इसे आदान-प्रदान की जाती थी। बालचन्द पाड़ा और गेण्डोली ग्राम के सती चैतरे विशेष महत्वपूर्ण थे और वहाँ पर अब भी इनकी श्रद्धा बरकरार है। इस रूप में पतिव्रता नारियाँ आज भी देवी की पूजा करती हैं और उन्हें अपने पति के साथ स्वेच्छा से जलाते है। ऐसी सती चैतरों को श्रद्धा प्रदान की जाती है।

बून्दी रियासत में गांव-गांव में विभिन्न देवी-देवताओं के थानक थे, जिनमें चैसठ जोगनियों और भैरव भी शामिल थे। कुछ प्रमुख देवियाँ थी कालिका, वीजयासन, नहर बाई, फूल बाई, लाल बाई, चामुण्डा, शीतला आदि। भैरव समूह में काल भैरव, बटक भैरव, घास भैरव, ग्वाला भैरव, हण्डयों भैरव आदि थे। आज भी ये देवताओं की पूजा गांवों में देखी जा सकती है। उदाहरण के रूप में बून्दी से लगभग 60 कि.मी. दूर उत्तर पूर्व में स्थित चैथरा के खेड़ा में नहन बाई, कालिका, लाल बाई के प्रसिद्ध मंदिर है। यहाँ नवरात्रि में श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ती है। बून्दी में स्थानीय देवताओं के प्रति विश्वास अभी भी महत्वपूर्ण है। यहाँ तेजाजी, गोगाजी, पाबूजी, खुयिया जी, ताखा जी आदि जैसे लोकप्रिय नायकों की पूजा होती है। भैरूजी भी एक अहम देवता माने जाते है, जिनका चबूतरा बून्दी नगर और तालाब गांव के बीच स्थित है। उन्हे मनोकामनाओं की पूर्ति करने वाला देवता माना जाता है। उनके चबूतरे के ऊपर एक वृक्ष है, जिसकी शाखाओं पर भक्तजन वस्त्रों के टुकड़ो को बांधकर मनौती करते है। इसके अलावा, ग्रामों में अन्य स्थानीय देवताओं की भी भैरूजी के रूप में पूजा होती है। बून्दी में काल भैरूजी की पूजा भी थी, लेकिन नागरिक जीवन में यह अब बहुत कम हो गया है।

लोक देवताओं के त्यौहारों में पशु-विशेष भी शामिल होते थे, जैसे दीपावली पर बैल, दशहरें पर घोडे, नाग पंचमी पर सर्प, वत्स द्वादशी पर बछड़े देव के रूप में पूजे जाते थे। कुछ अन्य उपहार भी पूज्य बन जाते थे, जैसे दवात, कलम, चाक, छूरा आदि।

दीपावली के दिन राजपूत समुदाय में शस्त्र पूजा का आयोजन इसलिए किया जाता था क्योंकि यह एक परम्परागत धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजन था जिसमें वे अपने आयुधों का पूजा करते थे। इसके अलावा, शस्त्र पूजा के माध्यम से वे अपनी सैन्य बल को मानसिक और आत्मिक तौर पर शक्ति प्रदान करते थे और यह सुनिश्चित करते थे कि वे अपने कर्तव्यों का निर्वाह करने के लिए तैयार रहे।

इसके अलावा राजपूत समुदाय अपने वीर गतिविद्याओं और शस्त्रों को भगवान की कृपा और आशीर्वाद प्राप्त करने का अवसर मानते थे। इस प्रकार, शस्त्र पूजा उनकी आदिवासी और राजपूत समुदाय की गरिमा शौर्य और वीरता का प्रतीक था।

कुछ समय पहले, इस आयोजन को आधुनिकता के चलते कम होते हुए देखा जा सकता है, लेकिन यह भारतीय समुदायों में अपनी धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा रहा है।

भैरव पूजा के संबंध में, राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में यह पूजा प्रचलित थी और उसमें 900 नामों का विस्तार हुआ। इनमें पणीधर, पणीनाथ, वीर बेताल नाथ, योगिनि नाथ, बटुकनाथ, भैरव, क्रोध नाथ, कलीप्रिया, गणेशतारा, गणनाथ, पापनाश, चिमनमस्त, मत्ता प्रिय, धारानाथ, पार्वतांरण, भवानीनाथ, बाणचरी, आनन्द भैरव, अन्त भैरव, भीष्म भैरव आदि शामिल है। भैरव को प्रेत आत्माओं को नियंत्रित करने की शक्ति से सम्बन्धित था और उन्हे उपासनीय माना गया था। उनकी शक्तियों का उपयोग भूत पिशाच और चोरों को दूर करने के लिए किया जाता था। बून्दी नगर में एक मोहल्ला भटुक भैरव के नाम से मशहूर था जो आज भी प्रचलित है।

नवगृह स्तुति का मध्ययुगीन भारत में विशेष प्रचलन था। डाहल, पाल, कामरूप और गुजरात मूर्ति शैलियों में वैष्णव देवालयों में नवग्रहों की पूजा की जाती थी। बून्दी राज्य में भी यह प्रथा थी। बून्दी नगर में रानीजी की बावड़ी के शिल्प और भक्ति भाव का महत्वपूर्ण स्थान था, जिसमें नवग्रहों का विशेष उल्लेख था। नवग्रहों के नाम चंद्र, मंगल, बुध, गुरू, शुक्र, शनि, रवि, राहुल और केतु थे। वैष्णव मत के अनुयायियों की संख्या बून्दी में अधिक थी। चारभुजा जी का मंदिर वहाँ के प्रमुख आराध्य था और केशवराय पाटन के कृष्ण उपासकों का प्रमुख तीर्थ था। बून्दी नगर में कल्याणराय जी और लक्ष्मीनारायण के मन्दिर भी वैष्णवों के लिए महत्वपूर्ण थे।

निष्कर्ष:

राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत, धार्मिक आस्थाएँ और खानपान परंपराएँ एक गहरे ऐतिहासिक और सामाजिक संदर्भ से जुड़ी हुई हैं। यह शोध दर्शाता है कि यहाँ का भोजन केवल स्वाद या पोषण तक सीमित नहीं है, बल्कि वह वैदिक, आयुर्वेदिक और आध्यात्मिक मूल्यों से भी अनुप्राणित है। बून्दी क्षेत्र की पाक कला, शक्ति पूजा में मांसाहार का प्रयोग, देवी-देवताओं की आराधना, और विभिन्न लोक उत्सव सभी मिलकर इस क्षेत्र की सांस्कृतिक बहुलता और धार्मिक विविधता को अभिव्यक्त करते हैं। राजस्थान में शक्ति पूजा, भैरव उपासना, नवग्रह स्तुति और वैष्णव परंपराएँ दर्शाती हैं कि यहाँ धार्मिक जीवन बहुस्तरीय और गहराई से जुड़ा हुआ है। बून्दी जैसे क्षेत्रों में यह परंपराएं आज भी जीवंत हैं और लोक संस्कृति में गहराई से समाहित हैं। इस प्रकार, यह स्पष्ट होता है कि राजस्थान की संस्कृति में खानपान, पूजा-पद्धति और सामाजिक जीवन एक-दूसरे के पूरक हैं। इन परंपराओं के संरक्षण और अध्ययन से न केवल क्षेत्रीय पहचान को समझा जा सकता है, बल्कि भारतीय संस्कृति की समग्रता का भी मूल्यांकन किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः-

1. डॉ. सोन कंवर हाड़ा- बून्दी राज्य की कला व संस्कृति
2. बून्दी गढ़ रिकॉर्ड : ऊपरी कमा बस्ता नं. 20 फाईल नं. 9 सन् 1928-1931
3. बून्दी गढ़ रिकॉर्ड: ऊपरी कमा बस्ता नं. 42 फाईल नं. 11 सन् 1928-1931
4. रनजोर पाक स्तनाकर (प्रथम खण्ड) पृष्ठ सं. 55
5. रनजोर पाक स्तनाकर (प्रथम खण्ड) पृष्ठ सं. 33
6. रनजोर पाक रतनाकर (प्रथम खण्ड) पृष्ठ सं. 41